आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received:11/03/2024; Accepted:15/03/2024; Published:24/03/2024

दलित विमर्श

पंकज जैन
तृतीया सेमेस्टर, बी.सी.ए.
सुराना कॉलेज, बेंगलुरु, कर्नाटक

पंकज जैन,**दलित विमर्श**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024, (69-74)

दलितों की परिभाषा का परिचय

दलित शब्द का अर्थ है पीड़ित, शोषित, दबाया हुआ, या टूटा हुआ। आजकल, यह शब्द उन वर्गों के लिए प्रयुक्त होता है जो वर्तमान में अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं। भारत और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में, दलितों को 'अछूत' के रूप में जाना जाता है। दलितों का जीवन हमेशा हाशिए पर बितता है, उन्हें बहिष्कार का सामना करना पड़ता है, और उनके मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है। अक्सर, दलित महिलाएँ ऊँची जाति के पुरुषों की यौन शोषण का शिकार बनती थीं। जब दलित जाति व्यवस्था के खिलाफ उत्कृष्टता का प्रयास करती थीं, तो उन्हें कठोर सजा मिलती थी। "दलित" शब्द संस्कृत से लिया गया है। दलित आंदोलन अस्पष्टता, छूआछूत, और इस प्रथा के खिलाफ सामाजिक भेदभाव के खिलाफ संगठित संघर्ष को प्रतिनिधित्व करता है। दलित साहित्य सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दलितों की सच्चाई, उनकी सीमाएँ, और संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

दलित समुदाय का इतिहास और पृष्ठभूमि

- दलित समुदाय हिंदू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों में मौजूद है|
- दलित समुदाय के कई वर्गों को पहले 'अछूत' या 'अस्पृश्य' माना जाता था|
- भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, भारत की जनसंख्या में लगभग 16.6 प्रतिशत या 20.14 करोड़ आबादी दलितों की है|
- दलित समुदाय के लिए आधिकारिक शब्द अनुसूचित जाति है|

- भारत के संविधान के अनुसार, दलितों को सकारात्मक भेदभाव के तहत आरक्षण मिलता है|
- दलित साहित्य एक साहित्यिक आंदोलन है जिसमें प्रमुखता से दलित समाज में पैदा हुए|
- रचनाकारों ने हिस्सा लिया और इसे अलग धारा मनवाने के लिए संघर्ष किया|
- भारत में दलित मुक्ति के आंदोलन में अंबेडकर जी का योगदान विशेष महत्व रखता है|

विभाजन के समय दलित की स्थिति

ब्रिटिश भारत में अछूतों की स्थिति बहुत कष्टकारी थी. उन्हें ज़्यादा परेशान किया जाता था, यातनाएं दी जाती थीं और उन्हें असहाय छोड़ दिया जाता था. उन्हें प्रचलित सुविधाओं का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी|

दलितों को शिक्षा से भी वंचित किया गया था. शिक्षा मूल रूप से केवल उच्च जातियों के लिए आरक्षित थी. दलितों को पारंपरिक शिक्षा से वंचित करने का उद्देश्य उन्हें अपने जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने से रोकना और जाति विभाजन को उजागर करना था|

1931-32 में गोलमेज सम्मेलन के बाद, ब्रिटिश शासकों ने समाज को सांप्रदायिक तौर पर बांटा. उन्होंने उस वक्त की अछूत जातियों के लिए अलग से एक अनुसूची बनाई, जिसमें इन जातियों का नाम डाला गया|

1950 के भारत के संविधान में दलितों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के उपाय शामिल थे. इनमें अस्पृश्यता पर प्रतिबंध लगाना और आरक्षण प्रणाली शामिल थी. आरक्षण प्रणाली सकारात्मक भेदभाव का एक साधन था जिसने अनुसूचित जातियों को दलित के रूप में वर्गीकृत किया|

स्वतंत्रता संग्राम दलित

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में दलितों ने भी अहम भूमिका निभाई|1857 की लड़ाई में दलित स्वतंत्रता सेनानी उदा देवी और उनकी वीरांगनाओं ने ब्रिटिश साम्राज्य का सामना किया| बंगाल से 45 दलित नेता भी आज़ादी की लड़ाई में बलिदान हुए| देश के अन्य राज्यों में भी दलितों ने आज़ादी के संग्राम में अपनी क़ुरबानी दी|

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल कुछ दलित स्वतंत्रता सेनानियों के नाम:

1. डॉ. बीआर अंबेडकर
2. उदा देवी
3. उदईया

डॉ. बीआर अंबेडकर दलितों के सबसे प्रसिद्ध नेता थे| वे भारतीय संविधान के जनक के रूप में भी जाने जाते हैं| उन्होंने दलितों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी|

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने 1930 में दलितों के लिए संगठन बनाया:

डॉ. बीआर अंबेडकर ने 8 अगस्त, 1930 को नागपुर में ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन (दलित वर्ग फेडरेशन) की स्थापना की थी. यह संगठन दलितों के लिए था| अंबेडकर ने 1923 में बहिष्कृत हितकारिणी सभा (आउटकास्ट्स वेलफेयर एसोसिएशन) की भी स्थापना की थी. यह संगठन दलितों के बीच शिक्षा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था|

अंबेडकर ने 1942 में ऑल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन की स्थापना की थी. यह संगठन दलित समुदाय के अधिकारों के लिए अभियान चलाने के लिए बनाया गया था. अंबेडकर ने 1927 में मनुस्मृति दहन, 1928 में महाड सत्याग्रह, 1930 में नाशिक सत्याग्रह और 1935 में येवला की गर्जना जैसे आंदोलन भी चलाए थे|

दलित आंदोलन की मुख्य घटनाए

- 1936 और 1947 के बीच केरल की रियासतों ने घोषणा की कि मंदिर सभी हिंदुओं के लिए खुले हैं|
- 1956 में अंबेडकर ने दलित बौद्ध आंदोलन शुरू किया|
- 1972 में मुंबई में दलित पैंथर की स्थापना हुई|
- शब्बीरपुर में दलितों और ठाकुरों के बीच तनातनी हुई|
- गांधीजी ने दलितों की मदद के लिए हरिजन यात्रा शुरू की|
- 1997 से 2007 के बीच सरकारी नौकरियों में 18.7 लाख की कमी आई|
- डॉ॰ अम्बेडकर ने दलितों के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की पैरवी की|
- भीमावाड़ी आंदोलन
- दलित पंथर आंदोलन

भीमावाड़ी आंदोलन

भीमावाड़ी आंदोलन भारत में दलित समुदाय के लोगों द्वारा आरंभ किया गया एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। यह आंदोलन सामाजिक न्याय, समाज में सामाजिक समानता और दलितों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य दलित समुदाय को उनके मौलिक अधिकारों के लिए जागरूक करना था। यह आंदोलन भारत के विभिन्न हिस्सों में सम्पन्न हुआ और दलित समुदाय के लोगों की आवाज को सुनने में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण क्रियाशीलता प्रदान की।

दलित पंथर आंदोलन

दलित पंथर आंदोलन भारत में दलित समाज के अधिकारों की सुरक्षा और समाज में सामाजिक समानता की दिशा में हुआ एक महत्वपूर्ण आंदोलन था। इस आंदोलन के कई प्रमुख नेता रहे हैं, जिनमें भीमराव आंबेडकर, जगजीवन राम, रवींद्र नाथ टागोर, नम्बिनारायण, आचार्य नारेंद्र देव आदि शामिल हैं। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य दलित समुदाय के लोगों के लिए आरक्षित सीटों की वृद्धि, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में उन्नति, और उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना था। यह आंदोलन भारतीय समाज में सामाजिक सुधार और समाज में समानता की ओर महत्वपूर्ण कदम था।

दलितों के लिए भारत सरकार द्वारा की गई पहल

- अनुसूचित जाति के लिए पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति
- डॉ. अम्बेडकर पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग
- बाबू जगजीवन राम छात्रवृति योजना
- अनुसूचित जाति के लिए उद्यम पूंजी कोष
- अनुसूचित जाति उप-योजना
- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम (एनएसएफडीसी) ऋण
- लड़कों और लड़कियों के लिए डॉ. अंबेडकर प्री-मैट्रिक और पोस्ट-मैट्रिक छात्रावास
- स्टैंड-अप इंडिया

दलितों की चुनौतियां और उनके समाधान

- चुनौतियां

सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में बुनियादी संसाधनों से वंचित होना। जाति व्यवस्था के कारण अस्पृश्यता, संसाधनों के एकाधिकार और ज्ञान के एकाधिकार का अभिशाप|

- समाधान

  इन समस्याओं का समाधान सामाजिक जागरूकता, उच्च शिक्षा की पहुँच, और समाज में उन्हें समानता का मान-सम्मान मिलना होना चाहिए। सरकारी योजनाएँ, न्यायिक सुरक्षा, और सामाजिक संगठनों के सहयोग से इस समस्याओं का समाधान संभव है।

संसाधन

1. **दलित इतिहास की पुस्तकें**
   - जूठन (आत्मकथा)- ओम प्रकाश वाल्मीकि
   - मुर्दहिया (आत्मकथा) – तुलसी राम
   - पच्चीस चौका डेढ़ सौ (कहानी) – ओम प्रकाश वाल्मीकि
   - अपना गाँव (कहानी) – मोहन दास नैमिशराय
   - सुनो ब्राह्मण (कविता) – मलखान सिंह
2. **दलित साहित्य के प्रमुख लेखक**
   - बिहारी लाल हरित
   - ओमप्रकाश वाल्मीकि
   - मोहनदास नैमिशराय
   - सूरजपाल चौहान
   - जयप्रकाश कर्दम
   - तुलसी राम
   - असंगघोष

निष्कर्ष

दलित आंदोलन की परिकल्पना समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे बुनियादी मानवाधिकार प्रदान करने के लिए एक परिवर्तनकारी सामाजिक क्रांति के रूप में की गई थी। इन मांगों ने विभिन्न विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों का रूप ले लिया। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने दलितों के हितों की वकालत की और उन्हें भारत के संविधान में विभिन्न मौलिक और अन्य कानूनी अधिकार दिए गए। हालाँकि, केवल संवैधानिक प्रावधान ही भेदभाव की सदियों पुरानी प्रथा को उखाड़ने में पर्याप्त साबित नहीं हुए। स्वतंत्र भारत में दलित पैंथर्स आंदोलन में इन मांगों ने

हिंसक रूप ले लिया। आंदोलन समर्थन जुटाने और दलितों को आवश्यक आत्म-सम्मान प्रदान करने में सफल साबित हुआ लेकिन कोई वास्तविक परिवर्तन लाने में विफल रहा। दलितों ने हिंदू धर्म में जाति आधारित भेदभाव से मुक्ति पाने के लिए बौद्ध धर्म अपनाने का वैकल्पिक तरीका भी अपनाया। वर्तमान में आंदोलन ने राजनीतिक स्वार्थ का रूप ले लिया है और वास्तविक मुद्दे को नजरअंदाज किया जा रहा है। जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, विभिन्न कानून छुआछूत और दलितों के खिलाफ अत्याचार से संबंधित प्रथाओं को खत्म करने के लिए बनाए गए थे। इस परियोजना में भारत के बाहर जाति आधारित भेदभाव और विभिन्न देशों में अधिकारों की निरंतर मांग पर भी ध्यान दिया गया। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ऐसे सामाजिक कलंकों को ख़त्म करने के लिए व्यापक सामाजिक परिवर्तन और सभी के लिए बुनियादी मानवाधिकारों का सम्मान आवश्यक है।

संदर्भ :-

1. https://www.e-ir.info/2010/06/23/the-dalits-of-india-education-and-development/ (विभाजन के समय दलित की स्थिति)
2. https://hindi.feminisminindia.com/2020/08/15/dalit-bahujan-adivasi-freedom-fighters-hindi/ (स्वतंत्रता संग्राम दलित)
3. https://www.ohchr.org/en/stories/2021/04/dalit-born-life-discrimination-and-stigma#: (परिचय)
4. https://www.bbc.com/hindi/india/2013/09/130912_hindi_special_dalit_sahitya_akd (दलित इतिहास की पुस्तकें)
5. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%A4_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF (दलित साहित्य के प्रमुख लेखक)

****